अब ... खुशी से ... भूमाता

मेरे प्रिय पिरामिड मास्टर्स और मित्रगण!

भूमाता अब खुश हो रही है।

भूमाता अब आराम कर रही है।

भूमण्डल अब नए मोड़ पर आ गया है। अब क्यों?

इसलिए कि सन् 2004 के अंत में भूलोक ने एक नए अध्याय में प्रवेश किया क्योकि इसे दिव्यलोक की तरह बदलने के लिए आवश्यक एक लाख चवालीस हज़ार (1,44,000) से अधिक आत्मज्ञानी अब तैयार हो चुके है। 1987 से पहले ऐसे आत्मज्ञानी इस भूमण्डल पर केवल कुछ सौ ही थे।

किसी महान काम के लिए असंख्य कर्मवीरों की आवश्यकता होती है। महाभारत के युद्ध के लिए कितने सैनिक, अधिरथ, महारथी, घुड़सवारों की आवश्यकता पड़ी थी, सब जानते है। इसी प्रकार इस भूमण्डल पर एक नूतन आध्यात्मिक क्रांति लाने के लिए भी असंख्य आत्मवीरों की एक बड़ी संख्या की जरूरत है। एक लाख चवालीस हज़ार आत्मवीरों का हिसाब लगाया गया था परंतु हमारे पिरामिड मास्टर्स ने उसस भी अधिक लोगो को तैयार कर लिया है। सन् 2012 के अन्त तक इनका लक्ष्य है ध्यान जगत बनाना और निश्चय ही इस लक्ष्य प्राप्ति में वे सफल होंगे। 2012 तक इस धरती से अशांति, अहिंसा, अविद्या आदि पूरी तरह से दूर हो जाएँगे।

इस लिए भूमाता आराम से साँस ले रही है और पुलकित हो रहा है।